P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

इंदिरा गांधी – एक सशक्त प्रधानमंत्री के रूप में

मंजु तोमर
सहायक प्राध्यापक,
राजनीति विज्ञान विभाग,
अम्बाह पी.जी. कॉलेज,
अम्बाह, मध्य प्रदेश, भारत

कौशलेंद्र उपाध्याय
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
अम्बाह पी.जी. कॉलेज,
अम्बाह, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

भारत एक ऐसा देश है जहां महिलाओं को शक्ति का प्रतीक माना जाता रहा है और इतिहास भी इस बात का साक्षी है कि प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक महिलाओं ने अपनी शक्ति और बुद्धिमता का परिचय दिया है। भारतीय शासन के इतिहास में ऐसी महिला ने प्रधानमंत्री का पद गृहण किया, जिन्हें समूचा विश्व श्रीमती इंदिरा गांधी के नाम से जानता है। श्रीमती इंदिरा गांधी अपने साहस और कुशल प्रशासन के कारण विश्वविख्यात रहीं। उन्होंने अपने प्रधानमंत्री काल में कई ऐसे निर्णय और कार्य किए जिनकी वजह से उन्हें एक सफल प्रधानमंत्री के रूप में देखा जाता रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीमती इंदिरा गांधी के उन महत्वपूर्ण निर्णयों पर प्रकाश डाला गया है जिसकी वजह से उन्हें विश्व स्तर पर ख्याति मिली।

मुख्य शब्द : श्रीमती इंदिरा गांधी, प्रधानमंत्री, प्रिवीपर्स, बांग्लादेश अदि।

प्रस्तावना

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्तें रमन्ते तत्र देवता'' । भारत का इतिहास नारियों के सम्मान और उनकी वीरता की गौरवगाथा का इतिहास रहा है। यहां पर नारी को पूजने की प्रथा विद्यमान रही है। भारत की नारियों ने भी अपनी बुद्धिमत्ता, दयालुता, त्याग तथा वीरता का लोहा मनवाया है।

भारतीय सभ्यता के इतिहास के पन्नों में मैत्रैयी, गार्गी, अत्रैयी तथा मान्धाता आदि विदुषियों ने अपनी विद्धता को स्वर्णाक्षरों में अंकित किया है तो वही वीरता तथा शासन के कार्य की निपुणता से भी एक गहरी छाप छोड़ी है।

वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल में महिलाओं को गौरवपूर्ण स्थाान प्राप्त था, नारियों को सहधर्मिणी, अर्धांगिनी तथा सहचरी माना गया है। पौराणिक काल में नारियों को देवी का स्वरूप मान कर उनकी पूजा भी की गई है। इस बात का इतिहास में भी साक्ष्य प्राप्त होता है। तब से लेकर आज तक के समय में नारी ने अपने गौरव की कई गाथाएं लिखी हैं। हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी योग्यता के बलबूते पर अपनी उपस्थिति को दर्ज कराया है। प्रस्तुत शोध में भारत की नारी की गौरव गाथा की एक महत्वपूर्ण कड़ी श्रीमती इंदिरा गांधी के जीवन के उन महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। जिनके द्वारा उन्होंने न केवल भारत की राजनीति में वरन् अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी अपनी सशक्त भूमिका का निर्वाह किया। अपने इन्ही मजबूत इरादों के कारण उन्हे शक्तिशाली राजनेता और प्रधानमंत्री के रूप में याद किया जाता है। श्रीमती इंदिरा गांधी के रूप में भारत को एक ऐसी प्रधानमंत्री मिली जिन्होंने भारत की राजनीति को एक मजबूत दिशा प्रदान की। उन्होंने अपनी सशक्त राजनीति के बल पर भारत को अंतर्राष्ट्रीय जगत में ख्याति दिलाई। उन्होंने राजनीति की एक नई इबारत लिखी जिसे हम यथार्थवादी राजनीति अथवा कूटनीति के नाम से जानते हैं।

श्रीमती इंदिरा गांधी को राजनीति विरासत में ही प्राप्त हुई थी। श्रीमती इंदिरा गांधी को हम एक महत्वाकांक्षी राजनीतिज्ञ के रूप में जानते हैं। उनकी इसी महत्वाकांक्षा ने उनको एक नई पहचान दिलाई।

भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री के रूप में जानी जाने वाली इंदिरा गांधी का जीवन परिचय बहुत ही विशेष है। उनका इंदु से इंदिरा तथा इंदिरा से प्रधानमंत्री बनने का सफर बहुत ही प्रेरणादायी है। श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1966 से लेकर 1977 तक और 1980 से अपनी जीवन के अंतिम क्षणों तक प्रधानमंत्री का पद भार सम्भाला था।

श्रीमती इंदिरा गांधी का नाम भारत के सशक्त प्रधानमंत्रियों में गिना जाता है। वह एक ऐसी शक्तिशाली महिला प्रधानमंत्री थी जिनके आगे पूरी दुनिया अपने घुटने टेकने पर मजबूर हो गयी थी। उनकी प्रसिद्धी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में छा गई थी। श्रीमती इंदिरा गांधी के हौसले बहुत ही बुलंद थे उनके इन्ही बुलंद हौसलों की बजह से उनके शासन काल में कई ऐसे ऐतिहासिक फैसले लिए गये जो उनके जीवन के मील के पत्थर साबित हुए तथा अपने इन्हीं

फैसलों की बजह से श्रीमती इंदिरा गांधी को एक सशक्त महिला प्रधानमंत्री के रूप में जाना जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने राजनीतिक जीवन में वह कौन से अहम निर्णय लिये जिनके कारण श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री के रूप में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक प्रसिद्ध कूटनीतिक राजनेता के रूप में जानी गई। श्रीमती इंदिरा गांधी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर इस शोध पत्र में प्रकाश डाला गया है।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने राजनीतिक कार्यकाल में कुछ ऐसे फैसले लिये जिसकी वजह से उन्हें एक सफल कूटनीतिक तथा यथार्थवादी नेता के रूप में पहचान मिली। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने शासन काल में तीन महत्वपूर्ण फैसले लिये वो क्रमशः बैंकों का राष्ट्रीयकरण, प्रिवीपर्स की समाप्ति तथा पाकिस्तान से युद्ध करके बांग्ला्देश को स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दिलायी। श्रीमती इंदिरा गांधी को एक सशक्त महिला प्रधानमंत्री के रूप में जाना जाता है इसके पीछे प्रमुख कारण है उनकी मजबूत इच्छा-शक्ति और उनकी निर्णयकारी शक्ति। श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने प्रधानमंत्रित्व काल में कई महत्वपूर्ण राजनीतिक फैसले लिये जो मील के पत्थर साबित हुये तथा यही निर्णय उनकी राजनीतिक परिपक्वता के परिचायक भी बने। उनके द्वारा लिये गये निर्णयों को हम निम्न प्रकार समझ सकते हैं–

राजा महाराजाओं के प्रिवीपर्स की समाप्ति

1967 में हुये आम चुनावों में कई रजवाड़ों ने सी. राजगोपालाचारी के नेतृत्व में एक स्वतंत्र पार्टी बनाई थी। इस पार्टी में ज्यादातर वो सदस्य थे जिनकी नाराजगी प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी से चल रही थी। श्रीमती इंदिरा गांधी ने इसी समस्या के चलते प्रिवीपर्स को समाप्त करने का मन बना लिया था।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रिवीपर्स को समाप्त करने के लिए अपना एकं सुझाव प्रस्तुत किया कि समस्त राजा महाराजा बिना किसी दबाव में स्वेच्छा से अपनी विशेष सुविधाओं का परित्याग कर दें। श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा कि वह नहीं चाहती है कि किसी भी राजा महाराजा के आत्मसम्मान और प्रतिष्ठा को कोई आघात पहुँचाया जाये इसीलिए वह स्वयं ही यह कदम उठालें। सरकार को कोई ऐसी कार्यवाही न करना पड़े परन्तु राजाओं ने उनके इस सुझाव को स्वीकारने से इन्कार कर दिया। अतः परिस्थितियां कुछ ऐसी बन गई कि जनमानस की भावनाओं के कारण श्रीमती इंदिरा गांधी अपने इस फैसले पर अडिग रहीं।

श्रीमती इंदिरा गांधी ने लोक सभा में 1 सितम्बर 1970 को 24वां संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तावित कर दिया। श्रीमती इंदिरा गांधी जी के द्वारा प्रस्तवित इस विधेयक को लोकतंत्र की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया गया। यह विधेयक लोकसभा में पारित होने में सफल हो गया परन्तु राज्य सभा में इस विधेयक को बहुमत प्राप्त नहीं हो सका। 5 सितम्बर 1970 को श्रीमती इंदिरा गांधी जी के द्वारा मंत्रीमंडल की बैठक बुलाई गई जिसमें यह फैसला लिया गया कि राष्ट्रपति को यह सलाह दी जाये जिससे शासकों का अभिज्ञात खत्म किया जा सके। श्रीमती इंदिरा गांधी जी के द्वारा राष्ट्रपति को इस विधेयक पर अपनी मंजूरी देने के लिए मना लिया गया, और राष्ट्रपति ने प्रस्तुत अध्यादेश पर अपने हस्ताक्षर कर दिये और इस प्रकार श्रीमती इंदिरा गांधी जी के द्वारा यह साहसिक कार्य किया गया जिससे उनकी शक्ति और साहस का परिचय मिलता है।

बैंको का राष्ट्रीयकरण

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा 14 निजी बैंको का राष्ट्रीयकरण किया गया था। 10 जुलाई 1969 को बैंगलोर में अखिल भारतीय कांग्रेस की समिति की बैठक में श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा एक 'नोट' पेश किया गया जो आर्थिक नीतियों से सम्बंधित एक प्रस्ताव था जिसमें 'बीमे और कच्चे माल के आयात का राष्ट्री्यकरण, कृषिभूमि और शहरी सम्पत्ति की अधिकतम सीमा के निर्धारण के साथ–साथ निजी बैंको के राष्ट्रीयकरण पर विचार करने के लिये कहा गया था।

अधिवेशन में इस तरह का प्रस्ताव अचानक ही रखा गया था। किसी को भी इस तरह के प्रस्ताव की कोई जानकारी नहीं थी मोरारजी देसाई ने इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं किया वो इसके पक्ष में नहीं थे, उनका कहना था कि जब तक वो वित्तमंत्री के पद पर है तब तक बैंको का राष्ट्रीयकरण सम्भव नहीं हो पायेगा। परन्तु श्रीमती इंदिरा गांधी अपने फैसले पर अडिग थीं, उन्होने अपने फैसले को न बदलते हुये श्री मोरारजी देसाई से वित्त मन्त्रालय का पद ही वापस ले लिया । इसका परिणाम यह निकला कि श्री मोरारजी देसाई ने त्याग पत्र दे दिया। ऐसी स्थिति में श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने अदम्य साहस का परिचय देते हुए तमाम विरोधों के बीच ही निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया। बैंको के राष्ट्रीयकरण के पश्चात 40 प्रतिशत को निजी क्षेत्रों जैसे– कृषि और उद्योगों के निवेश के लिये रखा गया था। 1980 में छः और निजी बैंको का राष्ट्रीयकरण किया गया। श्रीमती इंदिरा गांधी के द्वारा किये गये बैंकों के राष्ट्रीयकरण के फैसले से कुछ राजनेता बेशक नाखुश रहे हो, परन्तु देश की जनता के बीच में श्रीमती इंदिरा गांधी की लोकप्रियता और ज्यादा बढ़ गई। जनता ने उनके इस फैसले को बहुत सराहा, उनका यह कदम उनके राजनीतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

बांग्लादेश को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता

1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच जो जंग लड़ी गई उसी के परिणाम स्वरुप दुनिया के नक्शे् में बांग्लादेश का उदय हुआ था। पाकिस्तान का पूर्वी हिस्सा– पश्चिमी पाकिस्तान के जुल्म और अत्याचार से आक्रांत हो रहा था, पूर्वी पाकिस्तान के नेताओं ने भारत से मदद की गुहार की तत्पश्चात इंदिरा गांधी की अगुआई वाली कांग्रेस ने मदद देने का फैसला किया। श्रीमती इंदिरा गांधी की राजनीतिक कूटनीति के चलते ही बांग्लादेश ने अपनी स्वतंत्रता हासिल करके एक अलग स्वतंत्र देश के रूप में अपनी पहचान बनाई और एक अलग अस्तित्व बनाने में सफल हुआ। भारत की राजनीति

में भी श्रीमती इंदिरा गांधी ने एक सशक्त भूमिका का निर्वहन किया था। श्रीमती इंदिरा गांधी ने एक मजबूत और शक्तिशाली नेता के रूप में स्ययं को स्थापित किया। उन्होंने 1966 से 1977 तक लगातार प्रधानमंत्री के पद पर आसीन होकर भारतीय राजनीति को एक नवीन दिशा प्रदान की और विदेश नीति में भी यथार्थवादी विचारधारा का समावेश किया।

निष्कर्ष

उपर्युक्त शोध पत्र के विवेचन से यह ज्ञात होता है कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत की एक ऐसी प्रधानमंत्री में रूप में अपनी पहचान बनाई, जिससे उनकी ख्याति विश्वर मंच तक फैली। श्रीमती इंदिरा गांधी न केवल कुशल राजनीतिज्ञ थीं वरन वह एक साहसी और सशक्तं महिला भी थीं। उन्होंने अपनी निर्णय क्षमता के आधार पर कई महत्वतपूर्ण निर्णय लिए और अपने साहस और अपनी बुद्धिमता की एक नई मिसाल कायम की। श्रीमती इंदिरा गांधी ने सफल प्रधानमंत्री के रूप में भारत के इतिहास में अपनी कूटनीतिक रणनीतियों के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनाई। अपने प्रधानमंत्रित्व काल में किये गये कार्यों से श्रीमती इंदिरा गांधी ने भारत की नारियों के गौरव और सम्मान में एक नया अध्याय जोड़ दिया ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भारत में लोकसभा के सातवे साधारण निर्वाचनों की रिपोर्ट (1980), खण्ड.–II सांख्यिकीय – भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली

तिवारी धीरेन्द्र – इंदिरा गांधी का भारत की राजनीति में योगदान, डी.के. नई दिल्ली

तोमर पंचम सिंह – भारत में संसदीय मध्यावधि निर्वाचन, कॉलेज बुक डिपो जयपुर

चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद – राष्ट्रपति, संसद प्रधानमंत्री, साहित्य संगम इलाहाबाद 1999

भटनागर राजेन्द्र मोहन –भारतीय राष्ट्रीतय कांग्रेस का इतिहास पंचशील प्रकाशन जयपुर

डॉ. सूर्यवल्लभ सिंह – कांग्रेस का इतिहास

चाण्डक एन.व्ही. – इंदिरा गांधी प्रिन्टिवलै पब्लिश्ड जयपुर

पं. चन्द्रलशेखर – एक युग का अन्त, इंदिरा गांधी का उत्थान और पतन, लोक भारती इलाहाबाद

भारतीय शासन राजनीति – पुखराज जैन